विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग दशम्, विषय- हिंदी, दिनांक- 2 -9- 20

Based on NCERT pattern

।।अध्ययन -सामग्री ।।

कृतिका -पाठ- 2

।। जॉर्ज पंचम की नाक ।।

जॉर्ज पंचम का संक्षिप्त परिचय -:

फ्रेडरिक अर्नेस्ट अल्बर्ट; 3 जून 1865 – 20 जनवरी 1936) प्रथम ब्रिटिश शासक थे, जो विंडसर राजघराने से संबंधित थे। यूनाइटेड किंगडम एवं अन्य राष्ट्रमंडल समूह के महाराजा होने के साथ साथ, जॉर्ज भारत के सम्राट एवं स्वतन्त्र आयरिश राज्यके राजा भी थे। जॉर्ज ने सन 1910 से प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के दौरान और बाद में 1936 में अपनी मृत्यु पर्यन्त राज्य किया।

जॉर्ज पंचम

'HM *हिज़ मैजेस्टी द किंग*

हिज़ रॉयल हाइनेस प्रिंस ऑफ वेल्स

द ड्यूक ऑफ कॉर्नवाल एण्ड यॉर्क

HRH *द ड्यूक ऑफ यॉर्क*

HRH *प्रिंस जॉर्ज ऑफ वेल्स*

लिए कुछ तो होना ही चाहिए। कुछ क्या, बहुत कुछ होना चाहिए। जिसके बावरची पहले महायुद्ध में जान हथेली पर लेकर लड़ चुके हैं, उसकी शान-शौकत के क्या कहने, और वही रानी दिल्ली आ रही है...नयी दिल्ली ने अपनी तरफ़ देखा और बेसाख्ता[1] मुँह से निकल गया, "वह आए हमारे घर, खुदा की रहमत...कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं!" और देखते-देखते नयी दिल्ली का कायापलट होने लगा।

और करिश्मा तो यह था कि किसी ने किसी से नहीं कहा, किसी ने किसी को नहीं देखा पर सड़कें जवान हो गईं, बुढ़ापे की धूल साफ़ हो गई। इमारतों ने नाज़नीनों[2] की तरह शृंगार किया...

लेकिन एक बड़ी मुश्किल पेश थी—वह थी जॉर्ज पंचम की नाक!...नयी दिल्ली में सब कुछ था, सब कुछ होता जा रहा था, सब कुछ हो जाने की उम्मीद थी पर जॉर्ज पंचम की नाक बड़ी मुसीबत थी। नयी दिल्ली में सब था...सिर्फ़ नाक नहीं थी!

इस नाक की भी एक लंबी दास्तान है। इस नाक के लिए बड़े तहलके मचे थे किसी वक्त! आंदोलन हुए थे। राजनीतिक पार्टियों ने प्रस्ताव पास किए थे। चंदा जमा किया था। कुछ नेताओं ने भाषण भी दिए थे। गरमागरम बहसें भी हुई थीं। अखबारों के पन्ने रंग गए थे। बहस इस बात पर थी कि जॉर्ज पंचम की नाक रहने दी जाए या हटा दी जाए! और जैसा कि हर राजनीतिक आंदोलन में होता है, कुछ पक्ष में थे कुछ विपक्ष में और ज़्यादातर लोग खामोश थे। खामोश रहने वालों की ताकत दोनों तरफ़ थी...

यह आंदोलन चल रहा था। जॉर्ज पंचम की नाक के लिए हथियार बंद पहरेदार तैनात कर दिए गए थे, क्या मजाल कि कोई उनकी नाक तक पहुँच जाए। हिंदुस्तान में जगह-जगह ऐसी नाकें खड़ी थीं। और जिन तक लोगों के हाथ पहुँच गए उन्हें शानो-शौकत के साथ उतारकर अजायबघरों में पहुँचा दिया गया। कहीं-कहीं तो शाही लाटों[3] की नाकों के लिए गुरिल्ला युद्ध होता रहा...

उसी जमाने में यह हादसा हुआ, इंडिया गेट के सामने वाली जॉर्ज पंचम की लाट की नाक एकाएक गायब हो गई! हथियारबंद पहरेदार अपनी जगह तैनात रहे। गश्त लगती रही और लाट की नाक चली गई।

रानी आए और नाक न हो! एकाएक परेशानी बढ़ी। बड़ी सरगरमी शुरू हुई। देश के खैरख्वाहों[4] की एक मीटिंग बुलाई गई और मसला पेश किया गया कि क्या किया जाए? वहाँ सभी सहमत थे कि अगर यह नाक नहीं है तो हमारी भी नाक नहीं रह जाएगी...

1. स्वाभाविक रूप से 2. कोमलांगी 3. खंभा, मूर्ति 4. भलाई चाहने वाले

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें का प्रयास

करें ना समझ में आए तो संबंधित ग्रुप पर पोस्ट करें तथा अपनी कॉपी में लिखें ।

आज बस इतना ही, शेष कल....